शोध समीक्षा

2018–19

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान (IASE) बिलासपुर

शोध समीक्षा

2018–19

शोध समीक्षक

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी

एवं डॉ. क्षमा त्रिपाठी

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान (IASE) बिलासपुर

आमुख

बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने, उनको शालाओं में बनाए रखने, विषयों के प्रति रुचि जागृत करने हेतु शिक्षकों को जागरुक होना होगा, उन्हें शैक्षिक नवाचारों से परिचित होना एवं उनको शालाओं में प्रभावशाली शिक्षण व्यवस्था के लिए अनुभव प्राप्त करना होगा। इसके लिए आवश्यक है, कि शिक्षक प्रशिक्षक शोध करें एवं शैक्षिक समस्याओं का निराकरण करें, सुझाव प्रस्तुत करें। शिक्षकों, प्रशासकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों को समाज के अनुकूल, वर्तमान समाज के सन्दर्भ में पूर्व शोध कार्यों के निष्कर्षों का विश्लेषण कर आवश्यकतानुसार शोध कार्यों में संलग्न रहना चाहिए। उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान में शिक्षक प्रशिक्षकों एवं एम. एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा शोध कार्य संपन्न किए जाते हैं। शोध कार्यों के निष्कर्षों की समीक्षा प्रस्तुत पत्रिका में की गई। समीक्षा में सुधार हेतु सुझाव की अपेक्षा है।

डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी
प्राचार्य

शोध समीक्षा
अनुक्रमणिका

क्र.	लघु शोध विषय सूची	शोधकर्ता का नाम
1.	डाइट, कोरबा में केन्द्र प्रवर्तित योजनांतर्गत संचालित कार्य योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति एवं उपलब्धि का समीक्षात्मक अध्ययन	श्रीमती रेवारानी जाटवार डाइट, कोरबा
2.	कोरिया जिले के विकासखण्ड मनेन्द्रगढ़ के प्राथमिक शालाओं में सम्पर्क किट आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन: गणित विषय के सन्दर्भ में	श्री आशीष कुमार गौतम डाइट, कोरिया
3.	बिलासपुर जिले के अनुसूचित जनजातियों के गणितीय ज्ञान के सन्दर्भ में गणितीय उपलब्धियों का अध्ययन	श्री कौशल प्रसाद राव डाइट पेण्ड्रा
4.	शाला में निकलने वाले अवशिष्ट के प्रकार एवं मात्रा की पहचान करना	श्रीमती नीला चौधरी एवं डॉ. रजनी यादव IASE, बिलासपुर
5.	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में यू-ट्यूब के सन्दर्भ में भौतिक शास्त्र प्रायोगिक कौशलों का अध्ययन	श्रीमती एस. उषामणी IASE, बिलासपुर
6.	Awareness about Sexual Harasment and Self protection measures in Adolesciant School Going Girls in Bilaspur.	श्रीमती रीमा शर्मा एवं श्रीमती प्रीति तिवारी IASE, Bilaspur
7.	शिशु शिक्षा एवं स्वास्थ्य के संबंध में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सजगता का अध्ययन, बिलासपुर नगर के सन्दर्भ में	डॉ. क्षमा त्रिपाठी एवं श्री डी. के. जैन IASE, Bilaspur

8.	A Study of Creativity of B. Ed. Teacher	डॉ. संजय आयदे IASE, Bilaspur
9.	शालेय इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के शिक्षक-प्रशिक्षक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं के संस्था प्रमुखों के अभिमत का समीक्षात्मक अध्ययन	श्रीमती नलिनी पाण्डेय IASE, Bilaspur
10.	माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं में गुणवत्ता उन्नयन कार्यक्रम की प्रभावशीलता अध्ययन	श्रीमती नलिनी पाण्डेय श्रीमती अंजना अग्रवाल IASE, Bilaspur
11.	दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता एवं शालेय गतिविधियों में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन	श्रीमती अल्का शुक्ला डाइट पेण्ड्रा
12.	बिलासपुर जिले के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन	श्रीमती दीपाली राय IASE, Bilaspur
13.	निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के अभिभावकों के पाल्यों की शैक्षिक समस्या का समीक्षात्मक अध्ययन	श्री एस. डी. मिश्र डाइट, दुर्ग
14.	डी. एल. एड. के छात्राध्यापकों के द्वारा किए जा रहे शाला अनुभव कार्यक्रम के उपयोगिता का अध्ययन	पद्मा प्रधान डाइट कोरबा
15.	उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में गणित प्रयोगशाला का उनके अवधारणा निर्माण पर प्रभाव	श्रीमती सुषमा दुबे डाइट पेण्ड्रा

लघु शोध के निष्कर्षों के आधार पर आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण/ उन्मुखीकरण/ सेमीनार के विषय

एक्शन प्लान

1. लर्निंग आऊट के आधार पर शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाए।
2. विषयवार प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों का प्री एवं पोस्ट टेस्ट लिया जाए।
3. जिले के शिक्षकों का सम्पूर्ण डाटा संस्था में रहे।
4. गणित की मूलभूत अवधारणाओं को समझने हेतु शाला में गणित किट एवं प्रयोगशाला स्थापित करें।
5. अनुसूचित जनजातियों के छात्र/ छात्राओं हेतु रुचिकर गतिविधि आधारित शिक्षण हो। शिक्षकों को एवं अभिभावकों को प्रशिक्षित किया जाए।
6. शाला में ऐतिहासिक धरोहर व प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण की प्रवृत्ति छात्रों में विकसित करें।
7. शाला में दैनिक जीवन के उपयोग की वस्तुओं को पुन: चक्रण की विधियों की जानकारी छात्रों को देना।
8. विद्यार्थी विषयवार आवश्यकतानुसार भौतिक विज्ञान से संबंधित अवधारणाओं को सोशलसाइट्स/ से पढ़ सकने हेतु विज्ञान प्रयोगशाला में इन्टरनेट की व्यवस्था करें।
9. शालाओं में विद्यार्थियों को सेक्चूल हरासमेन्ट के प्रति जागरुकता अभियान संचालित करें।
10. शालाओं में Self Protection Skills से संबंधित जागरूकता अभियान संचालित करें।
11. आंगनबाड़ी केन्द्रों में पोषण एवं स्वास्थ्य के सन्दर्भ में गृहमेट, जागृति शिविर, स्व सहायता समूह जागरूकता कार्यक्रम, मेडिसीन किट, स्वच्छा अभियान आदि से संबंधित जागरूकता अभियान कराए।
12. बी. एड. शिक्षक प्रशिक्षण में नवाचारी शिक्षण हेतु कार्यक्रम बनाए जाएं।
13. शालेय इन्टर्नशिप कार्यक्रम से संबंधित शिक्षक प्रशिक्षक, शालेय प्राचार्य एवं मेन्टर को उन्मुखीकृत किया जाए।
14. विद्यालयों में भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की उपलब्धता, विज्ञान मेला, काउन्सिलिंग, अधिगम संसाधन निर्माण आई. सी.टी. का प्रयोग आदि कार्य किए जाएं।
15. दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु शालाओं में इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं भौतिक संसाधनों की उपलब्धता बनाएं।
16. श्रमिक बस्तियों से सतत रूप से शिक्षकों, माता–पिता एवं बच्चों के मध्य जागरूकता हेतु संगोष्ठियाँ, नुक्कड़ नाटक किए जाएं।
17. शिक्षक प्रशिक्षण में शाला अनुभव कार्यक्रम के अ्तर्गत परावर्ती लेखन कार्य हेतु उन्मुखीकृत करें।
18. शालाओं में गणित प्रयोगशाला की स्थापना की जाए–

श्रीमती निशी भाम्बरी
प्राचार्य
IASE, बिलासपुर

शोध निष्कर्षों की समीक्षा

लघु शोध अध्ययन में शिक्षा के विभिन्न आयामों को सम्मिलित किया गया है।

* शालेय स्तर के अन्तर्गत, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन किया गया है।
* शालेय स्तर पर शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं से शिक्षक प्रशिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षार्थी, शाला प्रमुख, किशोर विद्यार्थी, समुदाय के सदस्य, अभिभावकों को शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।
* शिक्षक प्रशिक्षण के अन्तर्गत डी. एल. एड. एवं बी. एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्मिलित किया गया है।
* शोध अध्ययन के अन्तर्गत विभिन्न आयामों से संबंधित समस्याओं का चयन किया गया– पेडॉगाजी, गणित, भूगोल, भौतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, नवाचारी शिक्षण प्रक्रिया, बालिका शिक्षा, शासन की योजनाएँ, अनुसूचित जनजाति के क्षेत्र, पर्यावरण अध्ययन, सोशल मीडिया, यौन उत्पीड़न, आंगनबाड़ी केंद्र की शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षक, शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अभियान, समावेशी शिक्षा, सामाजिक आर्थिक क्षेत्र आदि शैक्षिक आयामों को सम्मिलित किया गया।
* लघु शोध अध्ययनों में सर्वेक्षण विधि एवं प्रायोगिक शोध विधियों का प्रयोग किया गया।

पेडॉगाजी

नवस्वारी शिक्षण

विषय– गणित

1. **आशीष, गौतम (2018)** ने कोरिया जिले के विकासखण्ड मनेन्द्रगढ़ के प्राथमिक शालाओं में सम्पर्क गणित विषय की किट आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया एवं पाया कि गणित विषय की सम्पर्क किट का कक्षा शिक्षण में प्रयोग से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि विकसित हुई।
2. **राव, कौशल, प्रसाद (2018)** ने अनुसूचित जनजातियों, बच्चों के गणितीय ज्ञान के संदर्भ में गणितीय उपलब्धि का अध्ययन किया एवं पाया कि बैगा, कंवर, जनजाति के बच्चों की उपलब्धि उरांव जनजाति के बच्चों से न्यून है। पूर्व में इन जनजाति के अभिभावक गणितीय माप हेतु गैर मानक इकाई का प्रयोग करते थे, परन्तु वर्तमान में मानक इकाई का प्रयोग करते हैं।
3. **सुषमा, दूबे (2018)** ने उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में गणित प्रयोगशाला का उनके अवधारणा निर्माण पर प्रभाव का अध्ययन किया एवं पाया कि बच्चों में गणितीय प्रयोगशाला के प्रयोग से गणितीय अवधारणात्मक समझ विकसित हुई।

विषय– भौतिक शास्त्र

उषामणी, एस (2018) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में यू–ट्यूब के सन्दर्भ में

भौतिक शास्त्र प्रायोगिक कौशलों का अध्ययन किया एवं पाया कि यू-ट्यूब के द्वारा भौतिक विषय के प्रयोगों के उन्मुखीकरण से विद्यार्थियों ने उपकरणों की पहचान, प्रायोगिक कार्यप्रणाली से परिचित होना, प्रयोग के पाठ्यकों की गणना करने की समझ विकसित होना एवं प्रायोगिक सावधानियों से बेहतर रूप से परिचित हुए।

शिक्षा मनोविज्ञान

शिक्षा, मनोविज्ञान, आयामों के अन्तर्गत सृजनात्मकता, समायोजन क्षमता, सामाजिक बुद्धि, शैक्षिक समस्याओं आदि आयामों का अध्ययन किया।

सृजनात्मकता (Creativity)

(1) **Dr. Ayde, M. Sanjay (2018)** A study of creativity & B. Ed. Teachers- The students teachers are more highely creative on the dimension Hueney and lowest creative on the dimension orginality.

(2) **अल्का शुक्ला (2018)** ने दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता एवं शालेय गतिविधियों में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन किया एवं पाया कि सामान्य विद्यार्थी दिव्यांग विद्यार्थियों से अधिक समायोजित हैं तथा दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थी दोनों ही विद्यालयीन गतिविधियों में सहभागिता में उत्सुक रहते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान-

1. **राय दिपाली (2018):** बिलासपुर जिले के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन किया एवं निष्कर्ष पाया कि विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पड़ा।

समायोजन क्षमता-

शुक्ला, अल्का (2018): दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि,समायोजन क्षमता एवं शालेय गतिविधियों में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन किया एवं पाया कि सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता दिव्यांग विद्यार्थियों से उच्च है एवं दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थी दोनों ही शालेय गतिविधियों में सहभागिता हेतु उत्सुक रहते हैं।

शिक्षक शिक्षा

प्रधान, पद्मा, (2018): डी. एल. एड के छात्राध्यापकों के द्वारा किए जा रहे, शाला अनुभव कार्यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन किया एवं निष्कर्ष पाया कि डाइट में डी. एल. एड. छात्र-छात्राओं, अध्यापक ने शाला अनुभव कार्यक्रम में दक्षताओं का स्तर समान है। शालेय गतिविधियों में छात्र/ छात्राएं समान स्तर के सहभागी रहते हैं।

पाण्डेय नलिनी (2018): शालेय इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के

शिक्षक प्रशिक्षक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं के संस्था प्रमुखों के अभिमत का समीक्षात्मक अध्ययन किया एवं निष्कर्ष पाया कि शालेय इन्टर्नशिप कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षक एवं शाला प्रमुखों ने प्रशिक्षण हेतु बहुत ही उपयोगी माना है तथा 20 सप्ताह की अवधि भी आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षकों को इन्टर्नशिप कार्यक्रम का उन्मुखीकरण आवश्यक है।

शैक्षिक योजनाएँ– संस्थानों में केन्द्र प्रवर्तित योजनाएं–

जाटवार, रेवारानी (2018): डाइट कोरबा में केन्द्र प्रवर्तित योजनांतर्गत संचालित कार्य योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति एवं उपलब्धि का समीक्षात्मक अध्ययन किया एवं निष्कर्ष पाया कि केन्द्र प्रवर्तित योजना के माध्यम से दिए जाने वाले प्रशिक्षण अपेक्षित स्तर अनुकूल है किन्तु सभी सदस्यों की सहभागिता जरूरी है। शिक्षकों में नवाचार करने की पहल एवं उनका व्यक्तित्व विकास होता है, किन्तु प्रशिक्षण में शालाओं के एक ही शिक्षक बार–बार सभी प्रशिक्षण लेते हैं।

शिशु शिक्षा योजना–

डॉ. त्रिपाठी क्षमा एवं जैन, डी. के. (2018):– शिशु शिक्षा एवं स्वास्थ्य के संबंध में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सजगता का अध्ययन बिलासपुर जिले के सन्दर्भ में अध्ययन किया एवं निष्कर्ष पाया कि तीन वर्षों में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को दिए जाने वाले प्रशिक्षण की प्रकृति रूपरेखा स्पष्ट नहीं है। **ESEC** की योजना के प्रशिक्षण की आवश्यकता है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा स्वास्थ्य नैतिक शिक्षा, स्वच्छता संबंधी जानकारी बच्चों को दी गयी है।

गुणवत्ता शिक्षा अभियान

पाण्डेय, नलिनी एवं अग्रवाल, अंजना (2018): माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं में गुणवत्ता उन्नयन कार्यक्रम के प्रभावशीलता का अध्ययन किया, पाया कि गुणवत्ता शिक्षा अभियान के माध्यम से बच्चों की नियमित उपस्थिति में वृद्धि हुई। शाला प्रबन्धन समिति की सहभागिता बढ़ी शिक्षकों का अध्यापन कार्य नियमित हुआ।

बालिका शिक्षा– Sharma, Reema & Tiwari Preeti (2018): (Girls Education) Awareness About Sexual Harrasment and Self protection Measures in Addescout School going Girls in Bilaspur Findings Rurals Girls are more aware to discuss, and report the missdeeds of any relative or male friends to their mother, teachers police station. Rural girls are also know better about women rights than urban girls.

पाल्यों की शैक्षिक समस्या

मिश्रा, एस. डी. (2018): निम्न सामाजिक आर्यक स्तर के अभिभावकों के पाल्यों की शैक्षिक समस्या का समीक्षात्मक अध्ययन किया एवं पाया कि रिक्शा चालकों के पाल्य सरकारी शालाओं में अध्ययनरत हैं। पर्याप्त शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। शालाओं

में बच्चों में सीखने का प्रभाव सकारात्मक है। विषय की समझ बच्चों में है। शिक्षक बच्चों की शैक्षिक समस्याओं का निराकरण करते हैं।

राव, कौशल प्रसाद (2015): अनुसूचित जनजाति क्षेत्र– बिलासपुर जिले के अनुसूचित जनजातियों के गणितीय ज्ञान के सन्दर्भ में गणितीय उपलब्धियों का अध्ययन किया एवं पाया कि उरांव जनजाति के बच्चों की गणितीय उपलब्धि बैगा, कंवर, गोंड़ एवं कोल जनजातियों के बच्चों से अधिक है।

पर्यावरण जागरुकता

चौधरी, नीला डॉ. यादव, रजनी (2018): शाला में निकलने वाले अपशिष्ट के प्रकार एवं मात्रा की पहचान करना, निष्कर्ष बिलासपुर जिले की शालाओं के निरीक्षण में पाया कि शालाओं में मुख्यत: कागज, गत्ता, पुट्ठा, प्लास्टिक, स्टेशनरी, एल्यूमीनियम शीट, खाद्य पदार्थ, पेड़-पौधे संबंधी कचरा आदि अपशिष्ट प्राप्त होता है। शाला में अपशिष्ट प्रबन्धन की आवश्यकता है। शिक्षक एवं विद्यार्थियों के जागरूकता की आवश्यकता है। क्योंकि अपशिष्ट पुन: चक्रण की कम जानकारी रखते हैं। पानी बचाने के प्रति जानकारी रखते हैं।

लघु शोध अध्ययन के निष्कर्षों की समीक्षा से ज्ञात होता है कि किए गए शोध कार्यों में गहन अध्ययन की आवश्यकता है। शोध विषयों में चयनित चरों के विभिन्न आयामों के आधार पर शोध अध्ययन की उचित सांख्यिकी विधियों एवं शोध विधियों का प्रयोग करना उचित होगा।

न्यादर्श का चयन व्यापक करना होगा। आई. सी. टी में शोध कार्यों की कमी है। शोध कार्यों के सुझाव के आधार पर शैक्षिक योजना बनाने का प्रस्ताव को प्रस्तुत करना उचित होगा। शैक्षिक संस्थाओं द्वारा आवश्यकता आधारित शैक्षिक कार्यक्रम का संचालन करना उचित होगा।

– डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी

जाटवार, रेवारानी (2017-18): डाइट कोरबा में केन्द्र प्रवर्तित योजनांतर्गत संचालित कार्य योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति एवं उपलब्धि का समीक्षात्मक अध्ययन।

अध्ययन की आवश्यकता-

डाइट कोरबा में शिक्षकों द्वारा गुणवत्तायुक्त शिक्षण प्रक्रिया का संचालन बच्चों के स्तर के अनुकूल करने, साथ ही उनके व्यक्तित्व विकास, कौशल विकास तथा शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि व सुधार लाने हेतु विभिन्न गतिविधि आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कला एवं शिल्प टी. एल. एस. कम्प्यूटर प्रशिक्षण, पैडोगाजी आधारित प्रशिक्षण, विज्ञान प्रशिक्षण एवं क्रियात्मक अनुसंधान आदि शैक्षिक कार्यक्रम का केन्द्र प्रवर्तित योजना के अंतर्गत संचालन किया जाता है, प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या इन योजनाओं को विकासशील शैक्षिक नवाचार लाने में नवीन तकनीकों का क्रियान्वयन करने में एवं बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में प्रभावशाली रही है।

अध्ययन के उद्देश्य-

1. डाइट कोरबा में केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत संचालित कार्ययोजनाओं की स्थिति का अध्ययन करना।
2. डाइट कोरबा में केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत संचालित कार्य योजनाओं के क्रियान्वयन से प्राप्त उपलब्धि का अध्ययन

शोध विधि- प्रस्तुत अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श- प्रस्तुत अध्ययन में डाइट कोरबा के समस्त अकादमिक सदस्यों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। सत्र 2015-16 से 2017-18 तक 3 वर्ष में संचालित केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं का क्रियान्वयन की उपलब्धि जानने हेतु अकादमिक सदस्यों का चयन किया।

शोध उपकरण- डाइट के अकादमिक सदस्यों हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण- जिसमें डाइट स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, विषयवार उपलब्धि स्तर, योजना का फीडबैक, सदस्यों की सहभागिता आदि आयामों पर 35 कथन सम्मिलित किए गए। जो तीन विकल्प आधारित हैं।

प्रदत्तों का विश्लेषण- प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष- 1. डाइट कोरबा के अकादमिक सदस्यों के द्वारा डाइट में संचालित के. प्र. योजनान्तर्गत संचालित प्रशिक्षण के क्रियान्वयन के स्तर को अपेक्षित स्तर के अनुकूल बताया। किन्तु शत-प्रतिशत परिणाम प्राप्त करने के लिए संस्थान के सभी सदस्यों को और अधिक प्रयास करना होगा।

2. डाइट कोरबा में संचालित के प्र. योजनाओं के क्रियान्वयन से विषयवार उपलब्धि स्तर पर अपेक्षित स्तर के अनुकूल है किन्तु डाइट में प्रशिक्षण प्राप्त करने एक ही शिक्षक बार-बार प्रशिक्षण में उपस्थित होते हैं, अत: सभी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण अनिवार्य करना होगा।

3. जिले के शिक्षकों में शैक्षिक दक्षता का विकास एवं उन्मुखीकरण अपेक्षित स्तर के अनुकूल हैं, शिक्षकों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर शिक्षकों में नवाचार, समूह में कार्य करने के साथ व्यक्तित्व विकास होता है। किन्तु शाला में समस्त शिक्षकों की उपस्थिति अनिवार्य हो।

4. डाइट कोरबा में सत्र 15-16 में 60% कार्य योजनाएं क्रियान्वित हो पाईं। 2016-17 में 80% कार्य योजनाओं का संचालन किया गया। शत-प्रतिशत कार्य योजनाओं का संचालन समयाभाव के कारण नहीं हो पाया एवं विभिन्न कार्यों से सदस्यों की संलग्नता भी है। वार्षिक कैलेण्डर है। बनाकर योजनाओं का क्रियान्वयन अपेक्षित है।

एक्शन प्लान-

1. विषयवार प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों का प्री टेस्ट व पोस्ट टेस्ट लिया जाए।
2. फोकस शालाओं में नियमित मानीटरिंग की जाए।
3. जिले के शिक्षकों का सम्पूर्ण डाटा लिया जाए एवं समस्त शिक्षकों का उन्मुखीकरण किया जाए।
4. Learning out come के आधार पर प्रशिक्षण दें। प्रशिक्षण के पूर्व Need Analysis किया जाए।

गौतम, आशीष कुमार (2018): कोरिया जिले के विकासखण्ड मनेन्द्रगढ़ के प्राथमिक शालाओं में सम्पर्क किट आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर पर

प्रभाव का अध्ययन: गणित विषय के सन्दर्भ में।

अध्ययन की आवश्यकता: प्रस्तुत शोध अध्ययन में सम्पर्क शक्ति के प्रयोग से गतिविधि आधारित शिक्षण के माध्यम से बच्चों की सहभागिता में वृद्धि करने एवं उनमें गणित विषय के प्रति रुचि जागृत करने हेतु शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संचालन किया गया। पूर्व में सम्पर्क किट के प्रभाव का अध्ययन नहीं किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या गतिविधि आधारित गणित शिक्षण का प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक रूप से पड़ता है। क्या बच्चों की रुचि कक्षा में बनी रहती है एवं सीमित संसाधनों के उपयोग के बावजूद शिक्षक बच्चों को गणित विषय के सीखने के प्रति किस सीमा तक अभिप्रेरित कर उनकी उपलब्धि स्तर में सुधार ला सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन इन प्रश्नों के उत्तर जानने में उपयोगी होगा।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. सम्पर्क किट आधारित शिक्षण का छात्र/ छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
2. सम्पर्क किट आधारित शिक्षण का लिंग के आधार पर छात्र/ छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।
3. प्रायोगिक समूह में पूर्व परीक्षण एवं पश्चात परीक्षण पश्चात् शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन में प्रायोगिक शोध विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में कोरिया जिले के मनेन्द्रगढ़ विकासखण्ड के प्राथमिक स्तर के कक्षा 3री के 50-50 छात्र-छात्राओं का चयन रेण्डम सेम्पलिंग द्वारा किया गया।

शोध उपकरण– (1) स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण- पूर्व एवं पश्चात् विषय गणित, कक्षा- 3 री।

(2) सम्पर्क किट आदारित गणित विषय शिक्षक योजना का निर्माण।

निष्कर्ष– 1. प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि नियन्त्रित समूह से उच्च पाई गई। प्रायोगिक समूह में निरंतर सम्पर्क किट के माध्यम से गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य किया गया।

2. लिंग का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पड़ा।

3. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की पूर्व सहभागिता रही। स्व अध्ययन के लिए प्रेरित हुए।

एक्शन प्लान–

1. शिक्षकों को गतिविधि आधारित शिक्षण हेतु 3– उन्मुखीकृत किया जाए।

2. बच्चों को स्वयं सम्पर्क किट का प्रयोग कर सीखने हेतु प्रेरित करें।

3. प्रोजेक्ट कार्य करवाए जाएं।

4. गणित की मूलभूत अवधारणाओं एवं सक्रियाओं को समझने हेतु शाला में गणित प्रयोगशाला स्थापित की जाए।

****

राव, कौशल प्रसाद (2018): बिलासपुर जिले के अनुसूचित जनजातिय विद्यार्थियों के गणितीय ज्ञान के संदर्भ में गणितीय उपलब्धियों का अध्ययन।

क्षेत्र– पेडॉगाजी/ अनुसूचित जनजाति।

अध्ययन की आवश्यकता– बिलासपुर जिले की विभिन्न जनजातियाँ जैसे कि बैगा, गोंड़, कंवर, महार आदि जातियों के लोग अपने दैनिक जीवन में अपने ही तौर–तरीके से गणित को हल करते हैं उनके अपने तरीके हैं, गणित सीखने के इन तरीकों को जानने की जिज्ञासा है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षा के प्रति एक ही वातावरण निर्मित होने के बावजूद परिणामों में भिन्नता होती है। प्रश्नों के समाधान हेतु प्रस्तुत अध्ययन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य– 1. विभिन्न जनजातियों के विद्यार्थियों के उनके अपने गणितीय संदर्भ के ज्ञान का अध्ययन करना।

2. विभिन्न जनजातियों के विद्यार्थियों की गणितीय उपलब्धि का अध्ययन करना।

3. विभिन्न जनजातियों के विद्यार्थियों की गणितीय उपलब्धि पर अभिभावकों की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।

शोध विधि: प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में 10 प्राथमिक शालाओं को कक्षा 4थी के 100 विद्यार्थियों का चयन रेण्डम सेम्पलिंग से किया गया।

शोध उपकरण– 1. स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि प्रशिक्षण– कक्षा 4थी विषय गणित– इकाई– समय की माप, क्षेत्रफल, जोड़ की संक्रिया, मापन– पदों की संख्या– 15

2. अभिभावकों हेतु साक्षात्कार एवं उनके गणितीय ज्ञान के सन्दर्भ प्रश्नावली

प्रदत्तों का विश्लेषण– विवरणात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

(3) अवलोकन–

निष्कर्ष–

* अनुसूचित जनजातियों, बैगा, कंवर, जनजातियों के विद्यार्थियों की तुलना में उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की गणितीय उपलब्धि उच्च है।

* कंवर जनजाति के छात्रों की गणित अधिगम स्तर न्यून है। इन बच्चों को सीखने के

गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की आवश्यकता है।

* कंवर जनजातियों की छात्राओं का गणित में शैक्षिक उपलब्धि न्यून है।

* गणितीय ज्ञान के सन्दर्भ में कक्षा में अभी उनकी रुचि, संलिप्तता एवं अवधारणा को समझने में सभी विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रतिशत औसत 60% से 70% तक रहा।

* शोधकर्ता के द्वारा अभिभावकों से साक्षात्कार के माध्यम से दैनिक जीवन में गणितीय माप के उपयोग के संबंध में चर्चा की गई। चर्चा के दौरान यह ज्ञात हुआ कि पूर्व में अभिभावक गैर मानक इकाई से ही दैनिक जीवन में लेन-देन जैसे दूध की नाप, महुए की फसल पश्चात उसको कुरई या पइला से नापना, उनका कैलेण्डर उनके तीज त्यौहारों के आधार रहता था। ठंड एवं गर्मी के महीनों के समय की माप परछाई से, लम्बाई की माप बित्ता से, अनाज का रखरखाव बड़े-बड़े कुठला में गांवों की दूरी की माप मील द्वारा सामग्री का लेन-देन अनाज द्वारा, 20 रुपए को एक कोरी कहना इस प्रकार आदि परम्परागत इकाई का प्रयोग मापों के रूप में किया जाता था परन्तु वर्तमान में अभिभावक भी मानक इकाई का प्रयोग करने लगे हैं।

क्रियात्मक एक्शन प्लान- 1. अनुसूचित जनजातियों के छात्र/ छात्राओं को मुख्य धारा से जोड़ने हेतु रुचिकर, क्रिया आधारित, बच्चों की सहभागिता लेकर सीखने सिखाने की प्रक्रिया संचालित हो, शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए, अभिभावकों को प्रशिक्षित किया जाए।

चौधरी, नीला एवं यादव, रजनी (2017–18): शाला में निकलने वाले अपशिष्ट के प्रकार एवं मात्रा की पहचान करना

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।'

अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया को सुचारू व प्रभावी बनाने के लिए विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ रहना अति आवश्यक है अच्छे स्वास्थ्य में हमारे परिवेश की स्वच्छता की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्वच्छ व स्वस्थ परिवेश विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होता है। स्वच्छ व स्वस्थ परिवेश शालेय गतिविधियों को बिना व्यवधान के अधिकतम प्रतिफल के साथ पूर्ण कर पायेंगे। वर्तमान विद्यार्थी भावी समाज का निर्माण करते हैं। शाला द्वारा उच्च चरित्रवान, नैतिक, कर्त्तव्यशील नागरिक का निर्माण उचित आदतों के विकास से ही संभव होगा। अत: शाला में विद्यार्थियों को अपने परिवेश को स्वच्छ, सुन्दर बनाकर प्रकृति/ पर्यावरण संरक्षण के महत्व को जानना आवश्यक है। इसके लिए शालेय गतिविधियों से कितने प्रकार का अपशिष्ट कितनी मात्रा में प्राप्त होता है, इसकी मात्रा को कैसे कम किया जा सकता है, यह जानकर ही हम सही मायनों में अपशिष्ट प्रबंधन की दिशा में उचित कदम उठा पाएंगे। अत: उक्त अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. शाला स्तर पर अपशिष्ट के प्रकार एवं मात्रा को जानना, अपशिष्ट को reduce, reuse एवं recycle करने में सक्षम बनाना।
2. शाला स्तर पर अपशिष्ट प्रबंधन के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की जागरूकता/ समझ को जानना।
3. शाला में उत्पन्न होने वाले कचरे के प्रकार व मात्रा को जानना।
4. शाला में पुन:चक्रित करने योग्य अपशिष्ट का पता लगाना।

शोध प्रश्न–

1. शाला की विभिन्न गतिविधियों में कितने प्रकार का अपशिष्ट उत्पन्न होता है।
2. शाला में कितने प्रकार का कचरा कितनी मात्रा में उत्पन्न होता है,
3. शाला स्तर पर अपशिष्ट के उत्पादन व प्रबंधन के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का

दृष्टिकोण क्या है।

निष्कर्ष:-

1. शाला से प्राप्त अपशिष्ट को मुख्यत: आठ वर्गों में बांटा जा सकता है। शाला से प्राप्त कचरे में मुख्यत: कागज, गत्ता व पेड़ पौधों के अपशिष्ट पाए गए।
2. बिलासपुर जिले के 10 शालाओं का निरीक्षण कर पाया गया कि शालाओं में मुख्यत: कागज, गत्ता, पुट्ठा, प्लास्टिक, स्टेशनरी, एल्यूमीनियम शीट, खाद्य पदार्थ, पेड़-पौधों संबंधी कचरा इत्यादि अपशिष्ट प्राप्त होते हैं। शाला में निकलने वाले कुल अपशिष्ट का 35.15 प्रतिशत पेपर, कागज व गत्ता, 10.83 प्रतिशत प्लास्टिक, 14.07 प्रतिशत खाद्य पदार्थ, 11.30 प्रतिशत स्टेशनरी व अन्य कचरा पाया गया। इनमें से 46 प्रतिशत अपशिष्ट का पुन: प्रयोग किया जा सकता है तथा 77.87 प्रतिशत अपशिष्ट को कार्बनिक अपशिष्ट में बदला जा सकता है अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शाला में अपशिष्ट प्रबंधन कचरे की मात्रा को कम करना एवं पुन: प्रयोग करने के लिए विद्यार्थी, शिक्षक व अभिभावकों को जागरूक व प्रेरित कर ही प्रभावी होगा।
3. शाला स्तर पर शिक्षकों की बेकार पानी तथा ठोस अपशिष्ट के निष्कासन के प्रति उचित जानकारी रखते हैं, पेयजल की शुद्धता के प्रति 81 प्रतिशत शिक्षक जानकारी रखते हैं। परन्तु विद्यार्थी पानी तथा पुन:चक्रण योग्य अपशिष्ट केप्रति कम जानकारी रखते हैं।

एक्शन प्लान-

* शाला स्तर से ऐतिहासिक धरोहरों व प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण की प्रवृत्ति विकसित करें।
* विद्यार्थियों व शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृद्धि में वृद्धि करें।
* विद्यार्थी एवं शिक्षक शालेय गतिविधियों में ऐसे बदलाव लाएं कि उनसे कम से कम अपशिष्ट उत्पन्न हो।
* शाला में एवं दैनिक जीवन में वस्तुओं के पुन: उपयोग की प्रवृत्ति विकसित करें।
* शाला में व दैनिक जीवन में अनुपयोगी वस्तुओं के पुन:चक्रण की विधियों की जानकारी देवें।
* अपशिष्ट को reduce, reuse एवं recycle करने की नवीन विधियों से अवगत कराएं तथा छात्र इसे व्यवहार में ला पायेंगे।
* शालेय वातावरण में विद्यार्थी जीवन में स्व-अनुशासन की भावना का विकास करें।
* विद्यार्थी को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें।
* विद्यार्थी स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के महत्व को समझ सकें।

उषामणी, एस (2017-18) ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में यू-ट्यूब के सन्दर्भ में भौतिक शास्त्र प्रायोगिक कौशलों का अध्ययन''

सूचना एवं संचार तकनीकी के विकास एवं प्रसार से मानव के जीवन में अभूतपूर्व बदलाव आये हैं। विगत कुछ वर्षों में इंटरनेट और www के आगमन से हमारी जीवन शैली नाटकीय ढंग से परिवर्तित हुई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया की वजह से लोग पास आ गये हैं। छात्र समुदाय इससे अछूता नहीं है। सोशल नेटवर्क सिस्टम कई रूप में विद्यमान है। सोशल मीडिया के यूट्यूब की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका है। यू-ट्यूब में शिक्षा के विभिन्न आयामों में से सैद्धान्तिक, व्यावहारिक, प्रायोगिक पक्ष को भी विस्तार से समझ सकते हैं।

शिक्षक प्रायोगिक कार्य करते समय यू-ट्यूब की सहायता से प्रयोग प्रदर्शन कर प्रयोगों से सम्बन्धित आवश्यक उपकरण प्रयोगों को सम्पन्न करने की कार्यप्रणाली, पाठ्यांक से गणना कर परिणाम प्राप्त करना व प्रयोग से सम्बन्धित सावधानियों से अवगत करा सकते हैं। प्रायोगिक कौशलों में वृद्धि कर सकते हैं।

उद्देश्य- विद्यार्थियों में यू-ट्यूब के सन्दर्भ में भौतिक शास्त्र के प्रायोगिक कौशलों का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न- * विद्यार्थियों में भौतिक शास्त्र के प्रायोगिक उपकरणों की जानकारी कितनी है?

* विद्यार्थी भौतिक शास्त्र के प्रायोगिक उपकरणों की कार्यप्रणाली से कितने अवगत हैं?

* विद्यार्थियों में पाठ्यांकों से गणना करने की क्षमता कितनी है?

* विद्यार्थी प्रयोगों से सम्बन्धित सावधानियों से कितने अवगत हैं।

* यू-ट्यूब से प्रायोगिक कौशलों के उन्मुखीकरण के पूर्व एवं पश्च स्थितियों में कितना अन्तर है?

शोध विधि- प्रस्तुत अध्ययन प्रयोगात्मक एकल समूह प्रकृति का अनुसंधान है।

न्यादर्श- यादृच्छिक विधि द्वारा शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला शंकर नगर, बिलासपुर का चयन किया गया।

चर- स्वतन्त्र-चर- यू ट्यूब से उन्मुखीकरण आश्रित चर- प्रायोगिक कौशल।

निष्कर्ष- 1. उपकरणों की पहचान- यू ट्यूब से प्रायोगिक कौशलों के उन्मुखीकरण के पूर्व कम से कम 4 प्रयोगों की पहचान 66.66% विद्यार्थियों को थी एवं अधिकतम 5 प्रयोग 33.33% विद्यार्थी को पहचान थी।

* यू ट्यूब से प्रायोगिक कौशलों के उन्मुखीकरण के पश्चात् 100% विद्यार्थियों को 10 प्रयोगों के उपकरणों की पहचान हुई।

2. प्रायोगिक कौशल–कार्य प्रणाली–

* यू ट्यूब से प्रायोगिक कौशलों के उन्मुखीकरण के पूर्व कम से कम 66.66% विद्यार्थी 10 में से 3 प्रयोगों की कार्यप्रणाली से अवगत थे। जबकि अधिकतम 33.33% विद्यार्थी 4 प्रयोगों की कार्यप्रणाली से अवगत थे।

* यू ट्यूब से प्रायोगिक कौशलों के उन्मुखीकरण पश्चात् कम से कम 13.33% विद्यार्थी व प्रयोग एवं अधिक से अधिक 86.66% विद्यार्थी 10 प्रयोगों की कार्यप्रणाली से परिचित हो गये।

3. प्रायोगिक कौशल–पाठ्यांकों से गणना

* यू ट्यूब से प्रयागों के उन्मुखीकरण पूर्व कम से कम 6.66% विद्यार्थी एक भी प्रयोग के गणना करने में समर्थ नहीं थे, अधिक से अधिक 13.33%, 4 प्रयोग के पाठ्यांकों से गणना करने में समर्थ थे।

* यू–ट्यूब से उन्मुखीकरण पश्चात् कम से कम 6.66% विद्यार्थी 6 प्रयोग एवं अधिक से अधिक 20.33%.

* विद्यार्थी सभी 10 प्रयोगों के पाठ्यांक लेकर गणना करने में समर्थ हुए।

4. प्रायोगिक कौशल– सावधानियाँ

* यू–ट्यूब से प्रयोगों के उन्मुखीकरण के पूर्व कम से कम 26.66% विद्यार्थी एक भी प्रयोग की सावधानियों से परिचित थे। अधिक से अधिक 40% विद्यार्थी 3 प्रयोगों के सावधानियों से परिचित थे।

* यू–ट्यूब से प्रयोगों के उन्मुखीकरण पश्चात् कम से कम 13.33% विद्यार्थी 6 प्रयोग एवं अधिक से अधिक 20% विद्यार्थी सभी प्रयोगों के सावधानियों से परिचित हुए।

5. यू–ट्यूब से प्रायोगिक कौशलों के उन्मुखीकरण से विद्यार्थियों के प्रायोगिक कौशलों में वृद्धि हुई।

यू–ट्यूब से प्रायोगिक कौशलों के उन्मुखीकरण के पूर्व एवं पश्चात स्थितियों में सार्थक अन्तर है।

एक्शन प्लान– शिक्षक यू–ट्यूब में विद्यमान प्रयोगों को स्वयं देखें एवं विद्यार्थियों को दिखायें।

* भौतिक विज्ञान से संबंधित अवधारणाओं को सोशल साइट्स/ यू ट्यूब में ढूंढकर अध्ययन करें।

* कम्प्यूटर कक्ष/ विज्ञान प्रयोगशाला में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध हो।

एस. उषामणी

सहायक प्राध्यापक, IASE, Bilaspur

Sharma, Reema & Tiwari Preeti (2017-18) : Awarness about sexual harassment and self protection measures in adolescent school going girls in bilaspur.

Objectives of the Study:

1) To study the awareness about sexual harassment in rural and urban school going adolescent girls.
2) To study the awareness about sexual harassment among school going adolescent girls of different communities.
3) To study awareness about self protection measures used against sexual harassment among school going adolescent girls.
4) To suggest measures for the development of self protection skills for school going adolescent girls.

Research Question

1. What is the level of awareness about self protection, legal awareness and sexual harassment in adolescent school going girls in rural and urban areas?
2. What is the level of awareness about sexual harassment in adolescent school going girls in rural and urban areas?
3. What is the level of awareness about self protection, among school going adolescent girls in rural and urban areas?
4. What is the level of awareness about laws regarding sexual harassment in school going girls in rural and urban areas?
5. What is the level of awareness towards sexual harassment in school going adolescent girls in different caste categoties in rural and urban areas?
6. What is the level of awareness towards sexual harassment among the school going adolescent girls with reference to family unit.

* **Research Method-** Survey method
* **Sample- Adobscent Girls-** Class- 9th

*** Samplins Method-** Random Sampling.

Tools- 1. Self Made Quertionnaire regarding sexual harrasment and self Protection Measures.

Staticical Analysis- Perentage, Graphical Annalysis.

Findings

* Urban girls are more aware about discussing the teminology of sexual harassment with parents whereas very less rural girls are aware about it. It may be because of the family environment.
* Rural girls are more aware to discuss the misdeeds of any relative or male friends to their mother than urban girls.
* Rural girls also have superior Level of awareness to report to their teachers if they find something vulgar written on the toilet walls.
* The awareness towards reporting the mishappening in police station is again more in rural girls than urban girls.
* Rural girls are also more aware that they should attack the private parts if someone misbehaves with them.
* As far as women rights are concerned surprisingly again girls have more awareness. They know better that they have right against domestic violence, get free legal aid and that they cannot be arrested at night.
* Awareness level towards self protection is very less both in rural and urban girls.
* Awareness towards law is average in both rural and urban girls.
* Though the Urban girls have more overall awareness level towards sexual harassment rural girls have shown more awareness towards reporting the incidents. They are also less tolerant towards wrong done towards them although they have less access to social media.

REFERENCECS

1. Aditi Guarang, Sangeeta Priyadarshini & Bunu Margret E (2015) Knowledge of sexual harassment among the under graduate students in Udupi District. Nitte University Journal of Health Science. Vol. 6, No. 7, June 2016, ISSN 2249-71112.
2. Ap today (March 15, 2015) Teacher sexual harassment on 8th class student in Hyderabad.
3. Business Standard (March 24, 2015, of public school arrested for sexual harassment in Odisha's nabarangpur District).

Blog. ipleadas.in (DNA March 5, 2015) Punjab- Government teacher arrested for writing obscene remarks in girls notebook.

डॉ. त्रिपाठी, क्षमा एवं जैन डी. के. (2017-18): शिशु शिक्षा एवं स्वास्थ्य के संबंध में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सजगता का अध्ययन बिलासपुर नगर के संदर्भ में।

जानड्यूबी- बालक दूसरों के साथ रहकर अनौपचारिक ढंग से शिक्षा प्राप्त करता है। यह प्रक्रिया अनुभव को विस्तृत करती है तथा कल्याण की प्रेरणा देती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व- वर्तमान समय में 1 अप्रैल 2010 से शिक्षा को 6-14 वर्ष की आयु के बालकों का मौलिक अधिकार घोषित किया गया जिसकी विस्तृत व्याख्या संविधान के अनुच्छेद- 21 (ए) में की गई है। अधिकार लागू होने के बाद भी ड्राप आऊट की समस्या बनी हुई है। ये समस्या स्कूल में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की है लेकिन स्कूल आने के पूर्व बच्चे की शिक्षा केमापन का क्या आधार है इस ओर ध्यान नहीं दिया जाता है जबकि इसकी व्यवस्था ग्रामीण और शहरी दोनों स्तरों पर है। कृषि व्यवस्था एवं नगरीकरण से अभिभावकों का भी ध्यान बालक पर से दूर होते जा रहा है जिसका दुष्परिणाम भी सामने है अत: यह जानने के लिए आवश्यक है कि बच्चों में विद्यालय के संदर्भ में रुचि विकसित करने में, सही पोषक व्यवस्था करने भाषायी, शारीरिक विकास में उनकी भूमिका किस तरह की है जानने शोध की आवश्यकता है।

आंगनबाड़ी केन्द्र में प्रदत्त सेवाओं के बालकों के सीखने में उनके स्तर का आकलन कार्यकर्ताओं की रुचि, व्यवहार, क्रियाकलाप, सहजता पर निर्भर है। साथ ही शासन द्वारा मिलने वाली सुविधाओं पर इन सबका सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हो रहा है कि नहीं जानने की आवश्यकता है। शोध इस कार्य में भविष्य की संभावनाओं, उपलब्धियों को तलाशने बढ़ाने में मदद कर सकता है। सारी योजना, कार्य को प्रभावी ढंग से करने के बावजूद यदि परिवर्तन अपेक्षित स्तर पर नहीं हो रहा है तो क्या उपाय किये जा सकते हैं जानने शोध की आवश्यकता है। जैसे हाल ही के रिपोर्ट से यह साबित हो रहा है तो क्या उपाय किये जा सकते हैं जानने शोध की आवश्यकता है। जैसे हाल ही के रिपोर्ट से यह साबित हो रहा है कि कुपोषण की समस्या अभी भी बनी है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चों को आंगनबाड़ी केन्द्रों में किन-किन गतिविधियों में संलग्न रखा जाता है। क्या कार्यकर्ता इन गतिविधियों में दक्ष हैं क्या कार्यकर्ताओं द्वारा शासन द्वारा नित नए शैक्षिक परिवर्तन किए जा रहे हैं, उन्हें सही तरीके से संचालित किया जा रहा है कि नहीं जानने हेतु शोध की आवश्यकता है। क्या शाला पूर्व शिक्षा भविष्य में उन्हें सक्षम बनाने में समर्थ है यह जानने शोध के द्वारा पर मूल्यांकन की आवश्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सजगता का मूल्यांकन शिशु शिक्षा एवं स्वास्थ्य संदर्भ में करना।
2. आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चों के विकास के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की गतिविधियां कराई जाती हैं, अध्ययन करना।

3. आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की समझ बच्चों के प्रति सकारात्मक है, का अध्ययन करना।
4. आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा स्वास्थ्य पोषण एवं शिक्षा, स्वास्थ्य जांच एवं टीकाकरण तथा संदर्भ सेवा के प्रति सजगता का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न:-

1. क्या आंगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकर्ताओं की सजगता बच्चों के प्रति सकारात्मक है ?
2. क्या आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को बच्चों के भाषायी, सामाजिक, शारीरिक, संज्ञानात्मक विकास के प्रति सजगता है ?
3. क्या आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चों के विकास के लिए गतिविधियां कराई जाती हैं?
4. क्या आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा हेतु प्रयास किया जाता है?
5. क्या स्वास्थ्य जांच, स्वास्थ्य पोषण एवं टीकाकरण के प्रति सजगता है ?
6. क्या संदर्भ सेवा के क्षेत्र में कार्यकर्ताओं द्वारा सहयोग लिया जाता है ?

जनसंख्या:- प्रस्तुत शोध के जनसंख्या से तात्पर्य बिल्हा विकासखंड के बिलासपुर शहर के समस्त आंगनबाड़ी केन्द्र एवं उसमें कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं से है।

न्यादर्श:- न्यादर्श समूचे से चुनी गई इकाईयों का समूह है इससे संपूर्ण जनसंख्या के संदर्भ में निष्कर्ष प्राप्त किया गया।

समस्या के व्यापक क्षेत्र, समय, अर्थ की सुविधा एवं अध्ययन की उपयुक्तता को ध्यान में रखते हुए शोध बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखण्ड के बिलासपुर नगर के 50 आंगनबाड़ी केन्द्रों से चयन रेण्डम सेम्पलिंग से किया गया। चयनित केन्द्रों से आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का चयन न्यादर्श के रूप में दिया गया।

1. बिलासपुर नगर के आंगनबाड़ी केन्द्र आंगनबाड़ी केन्द्रों- 50, कार्यकर्ता की संख्या-50

चरांक- शोध चर निम्नानुसार है-

स्वतंत्र चर- शिशु शिक्षा एवं स्वास्थ्य।

आश्रित चर- आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सजगता।

शोध विधि- प्रस्तुत शोध मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षणात्मक प्रकृति का अध्ययन है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन शिशु शिक्षा एवं स्वास्थ्य के संबंध में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सजगता के अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

* तीन वर्षों में कार्यकर्ताओं को दिए जाने वाले प्रशिक्षण की प्रकृति एवं रूपरेखा स्पष्ट नहीं है।
* प्रशिक्षण के दौरान समयाभाव, प्रशिक्षण स्थल से दूरी, कुछ प्रशिक्षण (फल संरक्षण) की आवश्यकता कार्यकर्ताओं को नहीं है।
* ECCE एवं प्रत्यास्मरण एवं मूलभूत संबंधी प्रशिक्षण की और भी आवश्यकता है।
* आंगनबाड़ी केन्द्रों में पोषण एवं स्वास्थ्य के संदर्भ में गृहभेंट, जागृति शिविर, स्व सहायता समूह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। कार्यक्रम का निर्धारण सभी केन्द्रों में एक जैसा नहीं है। साथ ही कार्यकर्ता इस संदर्भ में उदासीन भी है।
* पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा के संबंध में मेडिसीन कीट से दवाई देने के संबंध में जागरूकता की आवश्यकता है।
* शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा का उद्देश्य मानसिक, शारीरिक, सामाजिक विकास करना है, के संदर्भ में जागरूकता अधिकांश कार्यकर्ताओं को है।
* शाला पूर्व शिक्षा के बच्चों में एकाग्रचित्त, क्रियाशील, सीखने के इच्छुक संबंधी विशिष्टताएं होती हैं 80% कार्यकर्ताओं को इसकी समझ है।
* आंगनबाड़ी केन्द्रों में शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा के संदर्भ में कार्यकर्ताओं द्वारा गतिविधियां करायी जानी है। जिसमें स्वच्छता, स्वास्थ्य, नैतिक शिक्षा संबंधी कार्य महत्वपूर्ण है।
* हमारे शरीर कितने प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता है, के संदर्भ में केवल 36% कार्यकर्ता ही जागरूक हैं।
* फोलिक एसिड पोषक तत्व लाल कोशिकाओं के निर्माण हेतु आवश्यक है। केवल 46% कार्यकर्ताओं ने सही अभिमत दिया।
* उपरोक्त निष्कर्ष से स्पष्ट है आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को स्वास्थ्य के संदर्भ में प्रशिक्षण की आवश्यकता है तथा शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा हेतु केन्द्र में करायी जाने वाली गतिविधियों हेतु समय प्रबंधन की जरूरत है। इन कार्यकर्ताओं को बी. एल. ओ. जैसे कार्यक्रम में संलग्न नहीं किया जाना चाहिए।

शोधकर्त्ता
डॉ. क्षमा त्रिपाठी
एवं
श्री डी. के. जैन
उ. शि. अ. संस्थान
बिलासपुर

DR. AYDE, M, SANJAY (2017-18):) "A STUDY OF CREATIVITY OF B. ED. TEACHER"

INTRODUCTION:Concept of Creativity

Creativity is a general ability possessed by all essentially healthy individuals to some degree. All people think in terms of different levels of creativity. Since a person can behave creatively in many ways, it is not strange that there are many definitions of creativity but there is no universally accepted definition of creativity. A creative teacher will have adequate mastery over his subject and a strong desire to acquire and more of it. In fact, he is an explorer of "truth". He strives continuously to grow professionally, he does self-education, analyses his shortcomings and tries utmost to get rid of them. He is always prepared to welcome the knowledge acquired as a consequence of new experiences and is always very cautious not to develop any sort of prejudice. He makes sincere efforts to learn something from all types of experience.

Rationale of the present study

Creativity is a mental and social process involving the generation of new ideas or concepts, or new associations of the creative mind between existing ideas or concepts. Creativity is fueled by the process of either conscious or unconscious insight. Creativity happens when various forces- are they environmental, motivational or psychological-interact to create something unique. It is an inborn capacity for thinking differently than most, seeing differently, and making connections and perceiving relationships other miss. A country economic growth can be sustained till the creative potential of population are sought out and attracted into required educational channels. In India the development of creative potential of an individual was the secondary subject earlier. But presently creativity and nation to large extent to meet effectively and solve apporpriately the emerging and challenging problems of this new world of science and technology. In any system of education, willingness of the part of puplils to learn, determination of the teachers to teach and anxiety on the part of the society to equip institutions well and squarely look after the needsof the pupils and teachers are the essential foundations of good education and

sources of excellence.

According to Kothari Commission, one of the objectives of education is development of aesthetic perception and creativity through participation in artistic activities and observation of nature. Creative teachers are always willing to experiment but they recognize the need to learn from experience. Teacher trainees will be the furture teachers of our country and very little studies were done on the creativity of them. Therefore, study on the creativity of B. Ed. teacher trainees was done. This will help to know the creativity of teacher trainees of secondary and senior secondary leveel taking into considerations of gender, streams (arts, science and commerce) background, residential background (urban and rural) and schooling (government and private).

Sansanwal D. N. and Jarial (1979) studied the personality differences among high and low creative teacher trainees. The main findings of the investigation were: 1. The student from the high creative group tended to be cheerful, active, talkative, frank, expressive, effervescent and carefree while the low creative group was restrained, introspective, robber and dependable. The members of low /creative group were sometimes pessimisting and doubtful. They tended to be involved in their own ego and interested in internal and mental life. On the other hand the high creative group tended to be free of jealous tendencies, adaptable, cheerful, uncompetitive and concerned about other people. 4. The low creative group tended to be tense, excitably rest less and impatient. On the other hand, the high creative group tended to be sedate, composed and satsfied. 5. Except these four factors, the two groups did not show significant differences on any of other twelve factors. John R. (2014) in his article made the case that creativity was domain specific. for many years creativity researchers assumed that creativity was rooted in general-transcending skills of trains. A governing body of evidence suggested, however, that creative performance was dimain specific. This led bith to changes in thinking about the nature of creativity and to a reexamination of previous evidence and assumptions about the genera, until than, creativity trainers would be wise to assume that creativity is domain specific. This assumption even if incorrect is less likely to nullify their efforts

than the assumpaion of content generality.

Objectuves of the stury: Objectives set for the present study are as under;

1. To study creativity of B. Ed. teacher trainees.
2. To find out of the difference between male and female B. Ed. teacher trainees on creativity dimensions (fluency, flexbility and originality).
3. To find out the difference between urban and rural background B. Ed. teacher trainees on creativity dimensions (fluency, flexbility and originality).
4. To find out of the difference between B. Ed. teacher trainees passed from government and private schools on creativity dimensions (fluency, flexibility and originality)
5. To find out of the difference between B. Ed. teacher trainees of working and non-working mothers on creativity dimensions (fluency, flexibility and originality. To find out the difference between B. Ed. teacher trainees of serviceman and businessman fathers on creativity dimensions (fluency, flexibility and originality).
6. To compare the mean scores of Fluency, Flexbility and originality of Arts, Science and Commerce background B. Ed. students.

Sample:

The sample for the present study was drawn from two B. Ed. colleges of bilaspur. it comprised 124 students from affiliated colleges of Bilaspur University, Bilaspur. The sampling technique used in this research is Random sampling.

RESEARCH DESIGN AND METHODOLOGY

This research study is a descriptive research and follows the approach of normative survey type research.

Tool used to Mesure Creative Thinking

To study of the creative thinking of puplis, verbal and non-verbal test of creative thinking constructed by Baquer Mehdi were used. This gave the scores for fluency, flexibility and originality in the verbal test and elaboration and originality in the non-verbal test. The composite creative thinking score was obtained from the sum of the individual standard scores obtains on the verbal and non-verbal tests. The verbal and non-verbal tests of creative thinking were administered to the sample and scored as per the instructions

given in the manual. The total scores of the fluency, flexibility and orginality in the verbal test and elaboration and originality in the non-verbal tests were tabulated. These scores were converted into standard t scores and totaled to get the composite creative thinking score.

Finding of the study: After proper analysis and interpretation of data, the major findings and conclusion of the study were as follows:

* The students were highly creative on the dimension Fluency and lowest creative on the dimension Orginality.
* There was no significant difference between Male and Female B. Ed. teacher trainees on creativity dimensions (Fluency, Flexibility and originality).
* There was no significant difference between B. Ed. teacher trainees passed from Government and Private schools on creativity dimensions (Fluency, Flexibility and Originality).
* There was no sinificant difference between B. Ed. teacher trainees of working and nonworking mothers on creativity dimensions (Fluency, Flexibility and Originality).
* There was no significant difference between B. Ed. teacher trainees of Serviceman and Businessman fathers on creativity dimensions (Fluency, Flexibility and originality).
* The mean scores of Fluency, Flexibility and Originality of Arts, Science and Commerce students differ significantly. Arts students were found to possess Fluency, Flexibility and Orginality significantly higher than Commerce students.
* Arts and Science background B. Ed. teacher possess creativity to almost same extent.

Acction Plan:

On the basis of findings of the study, relevant literature studies and observations made by the investigator during the study, following are the educational implications which may help in developing creativity among students-

* Creativity dimension Originality was found to be lowest in B. Ed teacher trainees, so they must be motivated to have some orginal ideas.
* Teacher educators should focus on training of B. Ed. teacher trainees for the development of innovative teaching aids, so that

their creatitivity should be enhanced.

* Besides lecture method of teaching Commerce background B. Ed. teacher trainees should use teaching methods by which they can make their teaching effective and interesting.
* Government schools should lays special emphasis on the creative thinking of students.
* Students should be allowed adequate freedom in responding to a situation and to have their own way when they need a particular kind of novel expression strongly enough.
* In our education system, learning experiences in the form of curriculum may be so designed as to foster creativity among children. For this purpose, curriculum can be made quite flexible and make provision for studying and working without threat of evaluation.
* Co-curricular activites in school can be used for providing opportunities for creative expression. Regular class work can be arranged in such a way as to stimulate and develop creative expression. Regular class work can be arranged in such a way as to stimulate and develop creative thinking among children.
* Schools should make efforts to rekindle the creativity in teachers through seminars, symposia, workshops, conferences etc.
* Educational games, Educational Kits should be provided to children by mothers for development of creativity.
* Teacher educators should themselves use inductive method to enhance the imagination of B. Ed. teacher trainees.
* Rural schools should have new technologies for creative development of students.
* Different competitions can be held for bringing out the creative talent of students.
* Students should have knowledge about various areas and fields where their creative aspect can help them in their career selection.

पाण्डेय, नलिनी (2017–18): शालेय इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षक–प्रशिक्षक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं के संस्था प्रमुखों के अभिमत का समीक्षात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की आवश्यकता– सत्र 2015–16 से बी. एड. का प्रशिक्षण कार्यक्रम बीससप्ताह का निर्धारित हो गया है। इंटर्नशिप कार्यक्रम में प्रशिक्षार्थी विद्यालयीन समय में विद्यालय में रहकर अध्ययन–अध्यापन एवं वे सभी प्रकार के गतिविधियों को संपादित करते हैं जो एक नियमित शिक्षकों के लिए तय रहती है।

अत: इस प्रकार इंटर्नशिप की अवधि एवं स्वरूप में पूर्णतया परिवर्तन हो गया है। इस परिवर्तन से बी. एड. प्रशिक्षार्थी क्या एक बेहतर शिक्षक के रूप में तैयार हो रहे हैं, यही जानने के लिए यह शोध किया गया है।

इंटर्नशिप को कार्यान्वित करने में प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षक–प्रशिक्षक एवं विद्यालय के प्राचार्यों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। अत: शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं प्राचार्यों से प्रश्नावली के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि इंटर्नशिप का यह स्वरूप कितना उपयोगी है।

अध्ययन का उद्देश्य– शालेय इंटर्नशिप कार्यक्रम के प्रति शिक्षक–प्रशिक्षक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं के संस्था प्रमुखों के अभिमत का समीक्षात्मक अध्ययन।

न्यादर्श– अटल बिहारी बाजपेई विश्वविद्यालय के अंतर्गत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षक–प्रशिक्षक, शाला प्रमुख– माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि।

शोध उपकरण– प्रश्नावली (स्वनिर्मित), शिक्षक प्रशिक्षक एवं शाला प्रमुखों हेतु द्विवर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम के इन्टर्नशिप, कार्यक्रम के प्रति अभिमत ज्ञात हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष–

विषय शिक्षक–प्रशिक्षक एवं संस्था प्रमुख ने सहमति जताई है कि इंटर्नशिप की अवधि 20 सप्ताह की उपयुक्त है।

2. इंटर्नशिप के तहत किए जाने वाली गतिविधियों के प्रति भी शिक्षक–प्रशिक्षक एवं प्राचार्यों ने प्रशंसा का भाव व्यक्त किया–

(i) प्रशिक्षार्थियों को बच्चों के व्यवहार में समझने की समझ विकसित हुई।

(ii) विद्यालय की समस्त गतिविधियों में प्रशिक्षार्थियों की भूमिका इंटर्नशिप में रही है।

(iii) प्रशिक्षार्थियों द्वारा किया जाने वाला सामुदायिक कार्यों में प्राचार्यों द्वारा सहयोग मिला है एवं मेंटर का मार्गदर्शन भी है।

3. इंटर्नशिप की दीर्घ अवधि प्रशिक्षार्थियों को एक अच्छे शिक्षक के रूप में तैयार करती है। प्रशिक्षार्थी अवलोकनकर्ता एवं कक्षाशिक्षण में पारंगत होते हैं।
4. इन्टर्नशिप कार्यक्रम में प्रशिक्षार्थियों द्वारा रिफ्लेक्टिव डायरी लेखन को शिक्षक-प्रशिक्षकों ने उचित माना है।
5. शिक्षक-प्रशिक्षक एवं प्राचार्यों को इन्टर्नशिप कार्यक्रम के संबंध में उन्मुखीकरण की मांग की गई है।

एक्शन प्लान-

1. इन्टर्नशिप कार्यक्रम के संबंध में शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं प्राचार्यों को उन्मुखीकृत किया जाए।
2. रिफ्लेक्टिव डायरी लेखन का अभ्यास कराया जाए।
3. कक्षा शिक्षण योजना एवं कक्षा अवलोकन कार्य हेतु प्रशिक्षार्थियों को मेंटर द्वारा नियमित, मार्गदर्शन दिया जाए।
4. प्रशिक्षार्थियों के गतिविधियों का नियमित आकलन करके प्रगति ज्ञात कर उनके क्रियाकलापों में सुधार किया जाए।

पाण्डेय नलिनी एवं अग्रवाल अंजना (2017–18)

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं में गुणवत्ता उन्नयन कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन।

अध्ययन की आवश्यकता–

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं का कुछ गुणवत्ता मापदण्ड पूरे नहीं हो रहे थे इसलिए इस शोध अध्ययन की आवश्यकता हुई। शैक्षिक गुणवत्ता के विकास में शिक्षक, पालक एवं समुदायका समन्वित प्रयास आवश्यक है। शैक्षिक गुणवत्ता केस्तर में कमी होने के कारणों को जानने तथा उनके निराकरण पर समय पर बल दिया जाये तो निश्चय ही शैक्षिक स्तर की वृद्धि में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य–

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं का गुणवत्ता सुधार करना–

1. शिक्षा गुणवत्ता कार्यक्रम का प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
2. विद्यालय की गुणवत्ता निर्धारित करने हेतु विभिन्न कारकों का अध्ययन करना।
3. शालाओं में सुधार हेतु किये जा रहे कार्यों का अध्ययन करना।
4. क्रियान्वयन की प्रक्रिया में आने वाली कठिनाईयों का पता लगाना।
5. उपरोक्त कठिनाई के आधार पर विद्यालय के सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन अप्रायोगिक प्रकृति का है, सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श–

बिलासपुर जिले के बिल्हा विकास खंड के अंतर्गत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लिया गया। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं के गुणवत्ता सुधार हेतु दो शासकीय विद्यालयों का चयन रेण्डम सेम्पलिंग के द्वारा किया गया–

शोध उपकरण–

1. अवलोकन प्रपत्र–

5. प्रश्नावली–

स्वयं द्वारा प्रश्नावली निर्मित किया गया है।

साक्षात्कार– विद्यालय की गुणवत्ता जानने हेतु (1) बच्चों (2) शिक्षकों एवं (3) प्राचार्य से साक्षात्कार किया गया।

विद्यालय अवलोकन प्रपत्र– विद्यालय की समग्र जानकारी हेतु विद्यालय अवलोकन पत्र भरा गया।

गुणवत्ता उन्नयन कार्य– 1. दसवीं विज्ञान विषय में–

1. प्रकाश 2. दैनिक जीवन में रसायन 3. उर्जा का अध्यापन कार्य किया। बच्चों में इसे पढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया।

1. ग्यारहवीं के छात्रों को **कला शिक्षा** के प्रति रुचि जागृत किया इसके अंतर्गत मैंने ग्रीटिंग, लिफाफे, पेन स्टेण्ड, बनाना सिखाया इनसे उनमें कला के प्रति रुचि बढ़ी।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बच्चों को **वृक्षारोपण** करने हेतु प्रोत्साहित किया। पर्यावरण से संबंधित विस्तार से जानकारी दी गई इससे छात्रों में पर्यावरण के प्रति रुचि बढ़ी।
3. विद्यालय में उपलब्ध **खेल सामग्री** का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित किया, छात्रों में खेल के प्रति रुचि बढ़ी।
4. विद्यालय **स्वच्छता** हेतु बच्चों को प्रोत्साहित किया।
5. विद्यालय के **प्रयोगशाला** का उचित रखरखाव एवं सही प्रयोग के लिए प्रोत्साहित।
6. छात्र-छात्राओं को **कंप्यूटर** का अधिक उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया।

निष्कर्ष-

1. बच्चों में विज्ञान विषय के प्रति रुचि जागृत हुई।
2. बच्चों के नियमित उपस्थिति के प्रतिशत में वृद्धि पाई गई।
3. विद्यालय में शिक्षकों की नियमित उपस्थिति पाई गई।
4. शाला प्रबंधन समिति की बैठकों में भूमिका के सहभागिता प्रतिशत में वृद्धि पाई गई।
5. शाला विकास योजना विद्यालय के गुणवत्ता सुधार हेतु प्रभावशाली है।
6. शिक्षकों का बच्चों के साथ व्यवहार/ संबंध सही पाया गया।
7. शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्य नियमित रूप से पाया गया।
8. शालाओं में सीखने का वातावरण बच्चों के अनुकूल पाया गया।
9. शिक्षकों के द्वारा शिक्षण योजना का निर्माण सही पाया गया।
10. विद्यालय में बच्चों का कक्षानुरूप पठनकौशल पाया गया।
11. बच्चों का कक्षानुरूप लेखन में सुधार देखा गया।
12. बच्चों की अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि देखा गया।
13. बच्चों का कक्षानुरूप वैज्ञानिक अभिवृद्धि देखी गई। बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि पाया गया।
14. बच्चों में कक्षानुरूप वैज्ञानिक अभिवृत्ति देखी गई। बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि पाया गया।
15. बच्चों का कक्षानुरूप आसपास की समझ एवं सूझ-बूझ पाया गया।
16. इस वर्ष की त्रैमासिक/ अर्द्धवार्षिक का मूल्यांकन सही पाया गया।
17. सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग सभी शिक्षक करते पाये गये।
18. शालेय स्वच्छता एवं अच्छी आदतों का विकास सही पाया गया।
19. शाला में विभिन्न प्रतियोगिताओं का स्तर सही पाया गया।
20. शाला का नियमित निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण सुधार देखा गया।
21. विद्यालय गुणवत्ता के बारे में समुदाय का अभिमत सही पाया गया।

एक्शन प्लान-

1. विद्यालय में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता होनी चाहिए।
2. विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था होनी चाहिए।
3. विद्यालय में विषय अनुरूप शिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए।

4. विद्यालय के शिक्षकों को गैरशिक्षकीय कार्य से मुक्त रखना चाहिए।
5. विद्यालय में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।
6. विद्यालय का वातावरण भयमुक्त होना चाहिए।
7. विद्यालय में छात्रों की नियमित उपस्थिति की जांच की जानी चाहिए।
8. विद्यालय में खेल सामग्री की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए।
9. विद्यालय में पाठ्य पुस्तकों की पर्याप्त उपलब्धता होनी चाहिए।
10. विद्यालय में शिक्षकों के द्वारा बच्चों से वृक्षारोपण कराना चाहिए।
11. विद्यालय में पर्याप्त कमरों की व्यवस्था होनी चाहिए।
12. शिक्षकों को उच्चअधिकारी द्वारा मार्गदर्शन देने की व्यवस्था होनी चाहिए।
13. अध्यापन को रुचिकर बनाने के लिए विज्ञान, गणित विषय संबंधित छोटे-छोटे सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए। जैसे विज्ञान मेला, गणित हेतु खेल-खेल में पढ़ाना।
14. अभिभावकों की मासिक बैठक में सतत मूल्यांकन में छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों से अवगत कराना चाहिए।
15. कमजोर छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षा छुट्टियों के दिन भी लगाना चाहिए।
21. छात्रों को गृहकार्य अनिवार्य रूप से देना चाहिए तथा उसका अवलोकन करना चाहिए।
22. खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।
23. प्राचार्य द्वारा बच्चों का सतत् मूल्यांकन करना चाहिए।
24. बच्चों को स्वअध्याय के लिए प्रेरित करना चाहिए।
25. शिक्षक को सभी छात्रों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए तथा पाठ्यक्रम पूर्ण करना चाहिए।
26. बच्चों को प्रोत्साहन के लिए बच्चों की उपलब्दि को सूचना पटल पर लिखना चाहिए।
27. छात्रों में बोलने का अभ्यास निरंतर कराना चाहिए ताकि वे अपनी बात निसंकोच रख सके।

शुक्ला, अल्का (2018): दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता एवं शालेय गतिविधियों मे सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की आवश्यकता– उच्च प्राथमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थी किस प्रकार सामान्य बच्चों के साथ मिलकर कक्षा प्रक्रिया में सहभागिता देते हैं, सामान्य विद्यार्थियों का व्यवहार दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ किस प्रकार का होता है। किस प्रकार दिव्यांग विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियों के व्यवहार को अपने आचरण में लाने का प्रयास करते हैं। दोनों कैटेगरी के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि किस प्रकार की है यह जानना आवश्यक है। दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन में आने वाली कठिनाईयों का आकलन करना तथा शालेय गतिविधियों एवं सामाजिक समानता का वातावरण तैयार करना एवं सामाजिक पर्यावरण निर्माण करना आवश्यक है अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन उपयोगी होगा।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन।
3. दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की शालाओं में होने वाली गतिविधियों में सहभागिता का अध्ययन।
4. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण की जानकारी प्राप्त करना।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 6वीं से कक्षा 8वीं में अध्ययनरत बिल्हा विकासखण्ड की उच्च प्राथमिक शालाओं के दिव्यांग विद्यार्थी– 60 सामान्य विद्यार्थी 60 एवं 50 शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन रेण्डम सेम्पलिंग द्वारा किया गया।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा निम्न शोध उपकरणों का उपयोग किया गया।

1. अध्ययन आदत इन्वेन्टरी प्रो. एम. पाल एवं अनुराधा शर्मा द्वारा निर्मित।

2. स्व निर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण कक्षा- 8वीं विषय- विज्ञान- कथन- 30

3. शिक्षकों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण- स्वनिर्मित प्रश्नावली

4. छात्र-छात्राओं की शालेय गतिविधियों में सहभागिता संबंधी स्वनिर्मित प्रश्नावली

निष्कर्ष-

(1) दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समान है।

(2) सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता दिव्यांग विद्यार्थियों से उच्च पाई गई।

(3) दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की शालेय गतिविधियों में सहभागिता एक समान है। दिव्यांग विद्यार्थी विद्यालयीन गतिविधियों में सहभागिता हेतु उत्सुक रहते हैं।

(4) महिला एवं पुरुष शिक्षकों में शिक्षा के प्रति समान दृष्टिकोण है।

एक्शन प्लान-

दिव्यांग विद्यार्थियों को भी कक्षा में समायोजन करने हेतु प्रेरित करना है। उनकी क्षमता अनुरूप उनको भी कार्य करने के लिए प्रेरित करना होगा उनको स्वयं को अभिव्यक्ति करने के लिए अवसर मिले। कक्षा, शिक्षण प्रक्रिया के दौरान उनको शिक्षण सुविधाएं उपलब्ध रहें।

शाला में सुविधायुक्त इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं भौतिक संसाधन उपलब्ध हो।

अल्का शुक्ला
सहायक प्राध्यापक
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
पेण्ड्रा, बिलासपुर

राय, दीपाली (2017–18): बिलासपुर जिले के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन।

अध्ययन की आवश्यकता–

पूर्व शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन एवं शैक्षिक उपलब्धि का बुद्धिलब्धि से संबंध भी ज्ञात किए गए हैं। वर्तमान में कोपरेटिव लर्निंग को प्रधानता दी जा रही है। बच्चे के आपसी सहयोग से सीखने पर बल दिया जा रहा है। मिंज सिलेक्शन (2010) नीदरलैंड पर स्कूली बच्चों पर अध्ययन किया गया है एवं सामाजिक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध नगण्य पाया है। सामाजिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में अध्ययन कम हुए हैं अत: प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित हुई।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।
2. विद्यार्थियों के सामाजिक गुण जैसे धैर्य, सहयोगात्मक स्तर, संवेदनशीलता, सामाजिक–पर्यावरण, हास्यवृत्ति गुणों एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में अध्ययन।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर नगर की दो शासकीय हायर सेकेण्डरी विद्यालयों के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत 40 विद्यार्थियों का चयन रेण्डम सेम्पलिंग द्वारा किया गया।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया।

1. सामाजिक बुद्धि मापनी– डॉ. एम. के. चड्डा एवं श्रीमति उषा गनेशन द्वारा निर्मित जिसमें 66 कथन सम्मिलित है.
2. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण।

निष्कर्ष– विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।

2. छात्रों के सामाजिक बुद्धि के धैर्य, विश्वास मत, सामाजिक पर्यावरण, निपुणता, हास्यवृत्ति आदि सामाजिक गुणों के साथ शैक्षिक उपलब्धि का ऋणात्मक सह संबंध पाया गया।

एक्शन प्लान–

1. विद्यार्थियों में सामाजिक गुणों की पहचान कर कक्षागत गतिविधियों को रचनात्मक बनाया जाए।
2. कक्षागत गतिविधियों को कॉपरेटिव लर्निंग के माध्यम से संचालित करे।
3. छात्रों एवं शिक्षकों के मध्य समूह चर्चा, सेमीनार, संगोष्ठी आदि गतिविधियों को संचालित करे।

मिश्रा, एस. डी. (2017-18): निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर के अभिभावकों के पाल्यों की शैक्षिक समस्या का समीक्षात्मक अध्ययन।

अध्ययन की आवश्यकता:

औद्योगिकीकरण व नगरीकरण के विकास के साथ-साथ समाज में अनेक परिवर्तन हुए, बदलते जीवन मूल्य तथा परिवारों की बढ़ती हुई आकांक्षाओं ने ग्रामीणों को शहर की ओर पलायन करने को मजबूर किया। शोधकर्ता के द्वारा ऐसे पाल्यों को लिया गया है, जिनके पिता रिक्शा चालक हैं, जो बच्चों को स्कूल छोड़ने का कार्य करते हैं और जब रिक्शा चालकों के बच्चों की तुलना उन बच्चों से करते हैं तो उनमें अनेक क्षेत्रों में भिन्नता रहती है। रिक्शा चालकों के बच्चों का शैक्षणिक स्तर, पिछड़ा एवं शिक्षा अर्जन में अनेक कठिनाईयाँ होती हैं शासन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जा रहा है, जिससे इन बच्चों को भी मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। रिक्शा चालकों के बच्चों में शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक आदि समस्याओं की समीक्षा कर उनकी शिक्षा व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है। अत: प्रस्तुत अध्ययन उपयोगी होगा।

अध्ययन के उद्देश्य-

1. रिक्शा चालकों की आर्थिक-सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. रिक्शा चालकों के बालक-बालिकाओं की शिक्षा पर उनके आर्थिक सामाजिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. रिक्शा चालकों के बालक-बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध विधि- प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श- प्रस्तुत अध्ययन में दुर्ग के नगर चार वार्डों में 100 रिक्शा चालकों का चयन रेण्डम सेम्पलिंग द्वारा किया गया।

निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के अभिभावकों के अन्तर्गत रिक्शा चालकों को लिया गया है।

शोध उपकरण-

1. साक्षात्कार अनुसूची- रिक्शा चालकों हेतु

2. **स्वनिर्मित प्रश्नावली**– रिक्शा चालकों के पाल्यों की शैक्षिक समस्याओं से संबंधित कथन सम्मिलित किए गए।

निष्कर्ष– (1) 43% रिक्शा चालकों के पास स्वयं का मकान है. दैनिक उपभोग की वस्तुएं जैसे टी. वी. मोबाइल, पंखा आदि वस्तुएं भी उनके पास है। 65% उत्तरदाता अपनी आय को पर्याप्त नहीं मानते हैं।

(2) रिक्शा चालकों के पाल्य शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हैं वे पैदल शाला जाते हैं। पालक अशासकीय, शालाओं की फीस वहन नहीं कर सकते हैं। पर्याप्त शैक्षणिक सामग्री भी उपलब्ध नहीं करा पाते हैं।

(3) शालाओं में पर्याप्त शिक्षक हैं एवं बच्चों को शालाओं में सीखने का प्रभाव सकारात्मक है। विषय की समझ बच्चों में है, शाला में होने वाली गतिविधियों में सहभागिता करते हैं।

(4) 85% रिक्शा चालकों के मतानुसार उनके वार्डों में शाला है। 89% बच्चे पढ़ाई में रुचि लेते हैं। 98% बच्चे शासकीय एवं 11% बच्चे अशासकीय शालाओं में पढ़ते हैं। अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों की फीस समय से देते हैं, पढ़ाई के लिए उचित वातावरण भी मिलता है। शिक्षक बच्चों की शैक्षिक समस्याओं का निराकरण करते हैं। बच्चों से पूछने पर बहुत अधिक शैक्षिक समस्याएँ बच्चों की नहीं है।

एक्शन प्लान–

आवासीय विद्यालयों में नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था पर्याप्त रूप से की जाए।

1. पर्याप्त सूप से की जाए।
2. माता-पिता से शिक्षक विद्यार्थियों की प्रगति नियमित साझा करें।
3. शाला त्यागी बच्चों एवं उनके अभिभावकों से शिक्षक नियमित सम्पर्क करें एवं शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करें।
4. श्रमिक बस्तियों में समय-समय पर गोष्ठियों और नुक्कड़ नाटकों का आयोजन कर जागरूकता अभियान प्रारम्भ किया जाए।

प्रधान, पद्मा (2018): डी. एल. एड. के छात्राध्यापकों के द्वारा किए जा रहे शाला अनुभव कार्यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन।

अध्ययन की आवश्यकता–

शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन हेतु शिक्षक प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है। डी. एल. एड. प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों में शिक्षण कौशल विकसित करना उनमें सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ शालेय वातावरण के व्यवहारिक ज्ञान शालेय गतिविधियों को जानना आवश्यक है। शाला अनुभव कार्यक्रम के अन्तर्गत शालेय गतिविधियों का अवलोकन एवं विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम सम्पन्न कराने का अनुभव प्रशिक्षार्थियों का प्राप्त होता है। अत: यह जानना आवश्यक है कि शाला अनुभव कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षार्थियों में विद्यालय की समस्त शैक्षिक, कक्षा शिक्षण प्रक्रिया, पाठ्यक्रम की समझ, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, शाला प्रबन्धन, नवाचारी गतिविधियों आदि का अनुभव प्राप्त करने में कितना उपयोगी है। अत: प्रस्तुत अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. शाला अनुभव कार्यक्रम का कक्षा अवलोकन प्रक्रिया पर प्रभाव का अध्ययन।
2. शाला अनुभव कार्यक्रम का डी. एल. एड. छात्राध्यापकों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव का अध्ययन।
3. शाला अनुभव कार्यक्रम का डी. एल. एड. छात्राध्यपकों की शालेय गतिविधियों की समझ एवं क्रियान्वयन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन।
4. शाला अनुभव कार्यक्रम की विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शिक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में कोरबा जिले का डाइट के डी एल एड प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के 120 शिक्षार्थियों का चयन सोद्देश्य न्यादर्शन विधि से किया गया है।

शोध उपकरण– प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा शाला अनुभव कार्यक्रम की उपयोगिता संबंधी स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली में कुल 40 कथन सम्मिलित हैं, जिसमें शाला अनुभव कार्यक्रम, कक्षागत गतिविधि आधारित शिक्षण, शिक्षण अधिगम सामग्री एवं शैक्षिक उपलब्धि, चार आयाम सम्मिलित हैं।

निष्कर्ष– 1. डी. एल. एड. छात्र/ छात्राओं में शाला अनुभव कार्यक्रम के प्रति दक्षताएँ समान स्तर की है।

2. शाला अनुभव कार्यक्रम के अन्तर्गत शालेय गतिविधियों के क्रियान्वयन में छात्र एवं छात्राओं में समान दक्षता स्तर परिलक्षित हुआ।
3. छात्र एवं छात्राओं के कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में दक्षता स्तर समान पाया गया।
4. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि समान है।

उपरोक्त निष्कर्षों से स्पष्ट है। डाइट में डी. एल. एड. छात्र/ छात्राओं में शाला अनुभव कार्यक्रम की दक्षताओं का स्तर समान है।

एक्शन प्लान–

1. शाला अनुभव कार्यक्रम के अन्तर्गत शालेय अवलोकन कार्य परावर्तन लेखन कार्य का प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
2. शाला अनुभव कार्यक्रम हेतु शालेय शिक्षक एवं डाइट के शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करे।
3. मेन्टर की भूमिका सुनिश्चित करने हेतु मेन्टर के साथ शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की समूह चर्चा कराई जाए।
4. मानीटरिंग की प्रक्रिया सुनिश्चित करे।

श्रीमती पद्मा प्रधान
व्याख्याता
डाइट, कोरबा

दुबे, सुषमा (2018): उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में गणित प्रयोगशाला का उनके अवधारणा निर्माण पर प्रभाव।

अध्ययन की आवश्यकता–

गणित शिक्षण को मनोरंजक और सार्थक बनाने की आवश्कता है, जिससे प्राथमिक स्तर से गणित की मूल अवधारणाओं को बच्चे समझ सकें, इसके लिए गणित शिक्षण की अहम भूमिका है, गणित प्रयोगशाला से उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों गणित की अवधारणाओं को बच्चे समझ सकें, इसके लिए गणित शिक्षण की अहम भूमिका है, गणित प्रयोगशाला से उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों को गणित की अवधारणाओं को गतिविधियों द्वारा स्वयं करके मनोरंजन के रुचि लेकर समझ सकते हैं, जिससे उनमें रटन–पद्धति को बढ़ावा नहीं मिल पाता है। अत: प्रस्तुत अध्ययन उपयोगी होगा।

अध्ययन के उद्देश्य– गणित प्रयोगशाला के प्रयोग के माध्यम से बच्चों की गणितीय अवधारणाओं की समझ का अध्ययन करना।

1. प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च उपलब्धि परिणामों की तुलना करना।
2. नियन्त्रित समूह के पूर्व एवं पश्च उपलब्धि परिणामों की तुलना करना।
3. प्रायोगिक एवं नियन्त्रित समूह के विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन करना।

शोध विधि– प्रयोगात्मक शोध विधि

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में 2 शासकीय उच्च प्राथमिक शाला के कक्षा 8वीं के 60 विद्यार्थियों का चयन प्रायोगिक एवं नियन्त्रित समूह हेतु यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरण– प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 8वीं के गणित विषय के वृत्त, बहुभुज एवं त्रिज्या तीन इकाइयों के अन्तर्गत निर्मित पूर्व एवं पश्च परीक्षण (बहुविकल्पीय) निर्मित किए गए परीक्षण में 20–20 पद प्रत्येक परीक्षण में सम्मिलित थे सही उत्तर के लिए 1 अंक प्रदान किया गया।

निष्कर्ष–

1. गणित प्रयोगशाला के माद्यम से गणित शिक्षण करने से विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ प्रभावित हुई। गणित प्रयोगशाला के प्रयोग पश्चात् विद्यार्थियों की गणितीय उपलब्धि उच्च पाई गई।

2. नियन्त्रित समूह में परम्परागत गणित शिक्षण के माध्यम से कक्षा शिक्षण पश्चात विद्यार्थियों की गणितीय अवधरात्मक समझ प्रायोगिक समूह से निम्न रही।

एक्शन प्लान–

उच्च प्राथमिक शालाओं में

1. गणित प्रयोगशाला की स्थापना की जाए।
2. शिक्षकों को गणित प्रयोगशाला के प्रयोग हेतु प्रशिक्षण दिया जाए।
3. नियमित रूप से शालाओं में गणित प्रयोगशाला के माध्यम से गतिविधि आधारित सीखने–सिखाने की प्रक्रिया की जाए।

शोध निर्देशक
डॉ. क्षमा त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक
IASE, Bilaspur

श्रीमती सुषमा दुबे
सहायक प्राध्यापक
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण
डाइट, दुर्ग (छ. ग.)